ISSN: Under Process| Vol. 1, Issue. 1| September 2021|Frequency: Biannual

अभिनवधारा
ABHINAVDHARA
International Journal of Innovation in Indic Studies
www.ijiis-org.com

भगवद्गीतायाम् कर्मणः प्राधान्यम् उत ज्ञानस्य

Sachin Dwivedi
Research Scholar
Karnataka Sanskrit University, Bengaluru

Received: 12/08/2021 | Accepted: 14/08/2021 | Published: 7/09/2021

भूमिका

गीता एक ज्ञान का गंभीर समुद्र है । श्रीमद्भगवद्गीता का उपनिषत् मे ही अन्तभाव है इसलिये अध्याय परिसमाप्ति के बाद मे **उपनिषत्सु** शब्द का प्रयोग किया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता पौरुषेय है इस कारण से साक्षात् उपनिषत् न कह कर **सर्वोपनिषदां सारः, समस्तवेदार्थसारसङ्ग्रहभूतम्** कहा गया है। इसका तत्व समझने में अनेक विद्वानों ने अनेक प्रकार से अध्ययन किया, क्योंकि इसका यथार्थ तत्व भगवान् कृष्ण के अलावा शायद हि पूर्ण रूप से जानता हो। जैसा कि श्रीमद् भगवद्पाद शङ्कराचार्य जी ने अपने श्रीमद्भगवद्गीता के उपोद्घात भाष्य में कहा – **तदिदं गीता शास्त्रं समस्तवेदार्थसारसङ्ग्रहभूतम् दुर्विज्ञेयार्थम्। तदर्थाविष्करणाय अनेकैः विवृतपदपदार्थवाक्यार्थन्यायम् अपि अत्यन्तविरुद्धानेकार्थत्वेन गृह्यमाणम् उपलभ्य अहं विवेकतः अर्थनिर्धारणं संक्षेपतः करिष्यामि।** अर्थात अनेक लोगों ने अपनी पूर्ववासना के अनुसार वेदार्थसारसङ्ग्रहभूत गीता का अनेक रूप से व्याख्यान किया।

मूल विषय

कुछ लोगों ने गीता को कर्म पर माना है । अर्थात समग्र श्रीमद्भगवद्गीता में केवल कर्म का बोधन कराया गया है। जैसे कि – **कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिताः जनकादयः कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्, नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो हि अकर्मणः, कर्मब्रह्मोद्भवं विद्धि** इत्यादि अनेक स्मृति वाक्यों से सिद्ध करते है कि समग्र श्रीमद्भगवद्गीता में कर्म की ही प्रधानता है।

अन्य आचार्य कर्म को यथार्थ और नित्य न मानकर ज्ञान का प्रतिपादन उससे मोक्ष की प्राप्ति ही श्रीमद्भगवद्गीता का परम उद्देश्य माना है ।**त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः, कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित् करोति सः, ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः प्रहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनो गतान्** इत्यादि स्मृतियों को प्रमाण मानकर श्रीमद्भगवद्गीता में कर्म की अनित्यता का प्रतिपादन कर के ज्ञान का ही मार्ग भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को दिखाना चाहते है। यदि ऐसा न तो अर्जुन के द्वारा पूछे गये प्रश्न के सार्थकता नहीं हो पायेगी यथा- **ज्यायसी चेत् कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन। तत् किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव॥**

अब प्रश्न ये उठता है कि परमपुरुषार्थ में सहायक कौन है? कर्म या ज्ञान। इस संसार में चार पुरुषार्थ देखे गये हैं यथा – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनमे से अनेक ऋषियों और सन्तों ने वेद का प्रमाण दिखलाते हुये मोक्ष को हि परमपुरुषार्थ बताया है क्यों कि मोक्ष की प्राप्ति होने के पश्चात अनेक दुःखों से अनुस्यूत अविद्या काम कर्म से जनित संसार की पुनः प्राप्ति नही होती है। यहां पर न स पुनरावर्तते ये श्रुती प्रमाण रूप से उपन्यस्त है। अर्थात मोक्ष रूप परमपुरुषार्थ की प्राप्ति होने के

पश्चात सः= आत्मा मुक्तः इत्यर्थः जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है, न आवर्तते = उसका कभी भी यहां पर मृत्यु लोक में आगमन नहि होता है। अर्थात सर्वविध दुःखों से तैरता हुआ अपने आप में ही लीन होके निरतिशय आनन्द को प्राप्त करता है।

ये परम पुरुषार्थ प्राप्त किससे होता है? क्या है निरतिशय आनन्द प्राप्त करने का साधन जो परम पुरुषार्थ प्राप्त करने के बाद अनुभूत होता है? क्या वहां पर कर्म की प्रवृत्ति है या नही, यदि प्रवृत्ति है तो कैसे नहि है तो कैसे ? कर्म की प्रवृत्ति और अप्रवृत्ति के विचार से ही ज्ञात कर सकते हैं कि मोक्ष के प्रति साधन क्या है। इस विचार से पहले हमे जानना चाहिये कि कर्म क्या है, शास्त्र में कर्म शब्द से क्या विवक्षित है वैदिक कर्म या क्रिया सामान्य व्यावहारिक कर्म। मीमांसा शास्त्र का पर्यालोचन कर ने के पश्चात शास्त्र में वैदिक कर्मों का हि कर्म शब्द से ग्रहण होता है। जैसे की मीमांसा सूत्र में पूर्वपक्ष सूत्र के रूप में उपात्त है **आम्नायस्य क्रियार्थत्वात्.....** यहां पर क्रिया शब्द का अर्थ वैदिक कर्मों से ही है। तथा च दूसरे ग्रन्थों में भी कर्म का विभाग प्रदर्शित करते हुये कहा गया है कि **पञ्चविधानि हि कर्माणि नित्यनैमित्तिकप्रयश्चित्तकाम्योपासनानि ।** एवं अनेक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि शास्त्र मे जो कर्म शब्द का प्रयोग किया गया है वो वेद विहित कर्म के ही अर्थ में है।लेकिन अन्यथागृहीत व्यक्ति द्वारा कर्म शब्द का अर्थ लौकिक कर्म से मान कर ही प्रयोग मे लाया जाता है। और अनेक लोग उसमे ही श्रद्धावान् है। लेकिन उसका शास्त्र में कोई भी तात्पर्य नहीं है।

तब जो शास्त्र विहित कर्म है उनका मोक्ष के कारणत्व है, अर्थात् शास्त्रविहित कर्मों से मोक्ष प्राप्त होता है या नहीं इस आशङ्का मे कर्मवादी पूर्वमीमांसक उपस्थित होते है कि **आम्नायस्य क्रियार्थत्वात्.....** अर्थात् समग्र वेदों मे कर्म की ही प्रधानता है, समग्र वेद अनेक प्रकार के कर्मों को विधान करते हुये सार्थक होते है, यदि वेदोम् मे कर्मो का विधान न किया जाये तो कर्मो को आनर्थकता हो जायेगी। जो वेद विहित है वो ही परमार्थ है अखण्ड अतः उसको बाधित नहीं कर सकता है। अतः वेद पर अनर्थ आशङ्का न हो इसलिये वेद विहित कर्म से जो फल प्राप्त होता है वो नित्य है और उससे ही मोक्ष प्राप्त होता है। इसलिये कर्म से ही मोक्ष प्राप्त होता है। यही अर्थ मानते हुए भगवान् श्री कृष्ण ने इसी अर्थ को मन मे रखकर अर्जुन को मार्गोपदेश करते हुए कहते है- **कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्** इत्यादि।

श्रीमद्भगवत्पाद शङ्कराचार्य जी के मतावलम्बियों के अनुसार ज्ञान से परम पुरुषार्थ की सिद्धि होती है **कैवल्यं लभते मर्त्यः किंतु ज्ञानेन केवलम्, ब्रह्मविदाप्नोति परं तरति शोकमात्मवित्** इत्यादि श्रुति प्रमाण से सिद्ध होता है तथा च **सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म, ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानाम्** इत्यादि स्मृतियों में ज्ञान की पराकाष्ठा को प्रदर्शित करते हुए ये सिद्ध होता है की गीता मे भगवान् श्री कृष्ण को ज्ञाननिष्ठा ही अभिप्रेत है। इसलिये ज्ञान से ही परम पुरुषार्थ की सिद्धि होती है। कर्म के विषय मे तो **क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति** इस श्रुति के अनुसार कर्म से जो पुण्य मिलता है उससे वो निरतिशयानन्द को प्राप्त नहीं कर सकता है। क्योंकि जो कर्मो से सम्पादित जो पुण्य है वो कृतकरूप हेतु से अनित्य है, अतः ज्यों ही मनुष्य के पुन्य क्षीण होते है वैसे ही मनुष्य साक्षात् मृत्यु लोक को प्राप्त करता है।

कर्मो के अनित्य होने से कर्म जनित फल का भी अनित्य होना सम्भव है और मोक्ष तो नित्य रूप से आख्यात है इसलिये कर्म से मोक्ष नहीं हो सकता है। अनित्य वस्तु से नित्य की प्राप्ति नहीं हो सकती है। मीमांसको के मत में स्वर्ग ही मोक्ष है। ये भी असंग है की कोइ भी का कार्य हो वो नित्य नहीं हो सकता क्योंकि वो अनित्य है यत् **कृतकं तदनित्यम् यथा घटः**, जैसो घडा वो मिट्टी का कार्य इसलिये घट लोक मे अनित्य देखा गया है। वैसे स्वर्ग भी यागजनित है स्वर्गका कारण याग और इसलिये स्वर्ग घट के समान कार्य है। जैसे की घट अनित्य है वैसे स्वर्ग भी अनित्य है। अतः यागजनित स्वर्ग परमपुरूषार्थ नहीं हो सकता है इसलिये धर्मार्थकाममोक्षरूप चारो पुरूषार्थो मे जो पहला पुरूषार्थ धर्माख्य है वो ही स्वर्ग है इसलिये स्वर्ग का अन्तर्भाव परम पुरूषार्थ मे नही हो सकता है।

निष्कर्ष

अथक प्रयास करने वाद भी प्रश्न और तदवस्था की स्थिति बनी रही कि मोक्षरुप पुरूषार्थ के प्रति साधन क्या है ज्ञान या कर्म श्रीमद्भागवद्गीता के शाङ्करभाष्य का पर्यालोचन करने के वाद ये निष्कर्ष निकला है कि जो मुख्यविषय श्रुतियों मे प्रतिप्रादित किया गया है स्मृतियों को भी उसी का अनुसरन करना चाहिये। जैसा कि वोला गया **"श्रुतेरिवार्थः**

स्मृतिरन्वगच्छत्" श्रुति मे तो **स्वस्वरूपानन्दावाप्तिः एव मोक्षः** अपने ही आत्मतत्त्व का हीअनुसन्धान करना ही मोक्ष है क्योंकि स्वकीय आत्मतत्त्व अविद्या से अज्ञान से आच्छादित है। **विष्णोर्मायाभगवती यया सम्मोह्यते जगत्** यदि अज्ञान की निवृत्ति करनी है तो अज्ञानविरोधी वृत्ति से ही कर सकते है और अज्ञान विरोधि वृत्ति तो ज्ञान ही हुयी इसलिये परमपुरूषार्थ स्वरूप मोक्ष की प्राप्तकरने के लिये ज्ञान ही आवश्यक है भगवद्गीता को श्रुतिसार माना गया है और परम पुरूषार्थ के प्रति साधन माना गया है। अतः एव भगवद्गीता मे ज्ञान की ही प्रधानता है। इसलिये अर्जुन का प्रश्न भी सुसंगत होता –**"व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे। तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।।"** इत्यादि।

तथा जो कहीं कहीं पर कर्म यदि फल की आकाङ्क्षा का विना किये जाये तो और जो नित्य कर्म सन्ध्यावन्दनादि वो चित्रशुद्धिकारक होते है और चित्रशुद्धि से ज्ञान की प्राप्ति, इस प्रकार से कर्मो का दर से परम पुरूषार्थ मे उपयोग है, "**अभ्युदयार्थः अपि यः प्रवृत्तिलक्षणः धर्मः वर्णाश्रमान् च उद्दिश्य विहितः सः देवादिस्थानप्राप्तनिमित्तोपि सन् ईश्वरार्पणबुद्ध्या अनुष्ठीयमानः सत्वशुद्धये भवति फलाभिसन्धिवर्जितः"।** ज्ञान की तो साक्षात् परम पुरूषार्थ मे कारणता है यही सारे उपनिषदों का श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश और अनुशासन है ।

।। ओम् शान्तिः।।

सन्दर्भग्रन्थ –

- **भगवद्गीताभाष्यम्** - प्रकाशक - दशिनामूर्ति मठ प्रकाशन, संस्करण - 2015
- **भगवद्गीताभाष्यम् अष्टीका** - विनायक गणेश आप्टे, प्रकाशक - स्वामी श्री अखण्डानन्द पुस्तकालय संस्करण - २०१९
- **तैत्तरीयोपनिषद**- प्रकाशक गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण :2011
- **ईशोपनिषद् शुक्ल संकर भाष्य हिदी अनुवाद** – प्रकाशक- गीता प्रेस, संस्करण- 1940
- **ब्रह्मसूत्रभाष्यम् चतुर्थाध्याय,** श्री आनन्द तीर्थ प्रकाशक -द्वैत वेदांत अध्ययन और अनुसंधान फाउंडेशन संस्करण - २००९
- **अर्थासंग्रह-** डॉ. राकेश शास्त्री प्रकाशक चौखंभा ओरिएंटलिया, दिल्ली संस्करण - २०१९
- **मीमांसा न्यायप्रकाश -**आपदेवकृत / ऐ.चिन्नास्वामी शास्त्री कृत 'सारविवेचिनी' संस्कृत टीका सहित चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी